ceed to the Half-hour Discussion. Shri Kishen Pattnayak.

---

16. 33 hrs.

FAMINE IN RAJASTHAN**

Shri Shivaji Rao S. Deshmukh: (Parbhani): Sir—(*Interruption*).

श्री किशन पटनायक (सम्बलपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, मुझे बहुत दुःख है .

Shri Tulshidas Jadhav (Nanded): I want to ask one question.

Mr. Deputy-Speaker: There cannot be any question. I am sorry.

Shri Tulshidas Jadhav: One question.

Mr. Deputy-Speaker: No.

Shri Shivaji Rao S. Deshmukh: On a point of order.

Mr. Deputy-Speaker: No point of order now.

Shri Shivaji Rao S. Deshmukh: Even without listening to the point of order?

Mr. Deputy-Speaker: I have taken up the other business.

Shri Shivaji Rao S. Deshmukh: I had raised it even before.

Mr. Deputy-Speaker: Is that with regard to the Half-an-hour discussion?

Shri Shivaji Rao S. Deshmukh: No, before this discussion I raised it.

Mr. Deputy-Speaker: I have called the hon. Member.

Shri Shivaji Rao S. Deshmukh: The discussion is not yet initiated.

Mr. Deputy-Speaker: Order, order.

श्री किशन पटनायक : उपाध्यक्ष महोदय, मुझे बहुत दुःख है कि आजादी के १६ साल के बाद और योजना के एक युग के बाद, एक घोर अकाल की स्थिति के बारे में मुझे आलोचना शुरू करनी पड़ रही है ।

जब देश के किसी भी इलाके में घोर अकाल की स्थिति आती है और लाखों आदमी और जानवर खतरे में पड़ जाते हैं, तो उससे एक तो यह साबित होता है कि योजना की नीतियां असफल रही हैं, और दूसरा यह कि सरकार के प्रशासन को लकवा मार गया है और वह खत्म हो गया है । यह नीति के बारे में और प्रशासन के बारे में असफलता का परिणाम है कि इस युग में घोर अकाल की स्थिति पैदा हो गयी है ।

पहली बात मेरी यह है कि सिर्फ राजस्थान में ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के और भी कई इलाकों में अभी भी अकाल की स्थिति है, जैसे उड़ीसा, पंजाब और मध्य प्रदेश के कुछ इलाके । कुछ इलाकों की स्थिति प्रचार न होने से अखबारों में ठीक ढंग से नहीं आ पाती जैसी कि राजस्थान की स्थिति आ गयी है । उड़ीसा में तो इस स्थिति का एक नतीजा निकला है, जो कि जाहिर हो गया है । उड़ीसा में दो हजार आदमी के करीब हैजे से मर जाना इसी अस्वाभाविक स्थिति का परिणाम है । इन मौतों का कारण अकाल के सिवाय और कुछ नहीं है लेकिन हैजे के कारण अकाल की स्थिति तो छिप गयी और हैजे की बात फैल गयी । इस जमाने में, आजादी के १६ साल के बाद देश के एक इलाके में एक दो महीने में दो हजार आदमियों की इस तरह हैजे से मौत हो जाना यह बहुत शर्म की बात है ।

यों तो एक दृष्टि से हिन्दुस्तान में कुछ इलाके ऐसे हैं जहां कि निरन्तर अकाल की स्थिति रहती है, और हर राज्य में ऐसा एक एक इलाका होता है । और हिन्दुस्तान में जिस ढंग से योजना हुई है, उससे इलाकों में गैर बराबरी बढ़ रही है । योजना एक चक्की है जो कि इन इलाकों को पीस रही है ।

**Half-an-hour discussion.

[श्री किशन पटनायक]

एक तरफ तो हर राज्य में एक आडम्बर का इलाका होता है जहां योजना से लाखों रुपया खर्च होता है, फिजूलखर्ची होती है, और दिखावे के लिए कुछ आडम्बर की चीजें हो जाती हैं ।

16.36 hrs.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

और दूसरी तरफ अंधेरा रह जाता है । इस तरह से हिन्दुस्तान में एक अकाल का और क्षुधा का भूगोल है । हर प्रान्त में ऐसे अकाल वाले इलाके हैं जैसे उत्तर प्रदेश का पूर्वी इलाका, राजस्थान का पश्चिमी इलाका, पंजाब का दक्षिणी इलाका, उड़ीसा का दक्षिणी इलाका, आन्ध्र का उत्तरी इलाका । ऐसे इलाके हर प्रान्त में हैं जहां कि निरन्तर अकाल की स्थिति रहा करती है । और जब स्थिति इससे भी ज्यादा बुरी हो जाती है, तब उसकी अखबारों में चर्चा होती है और हम संसद् में उसका जिक्र करते हैं कि अकाल की स्थिति हो गयी है । यह स्थिति इतनी भयावह हो जाती है कि उसके प्रति हम लोगों की प्रतिक्रिया भी ठीक ढंग से नहीं हो पाती ।

अकाल का मसला इतना बड़ा मसला है कि इस पर तुरन्त ध्यान दिया जाना चाहिए, लेकिन यह दुर्भाग्य की बात है कि यद्यपि इस अधिवेशन के शुरू होने के पहले ही दिन से हम लोगों ने इस पर बहस के लिए कोशिश की, लेकिन आज आखिरी दिन इस पर बहस के लिए आधे घंटे का समय दिया गया है ।

राजस्थान में जो अकाल की स्थिति है उसको भी अभी तक सरकार ने ठीक ढंग से नहीं माना है । हर अखबार में इसकी रिपोर्ट छप चुकी है कि राजस्थान की हालत कितनी खराब है । मेरे पास एक छोटा सा अखबार है । इसमें भी बड़े अक्षरों में यह समाचार छपा है, यही नहीं, जो पूंजीपतियों के अखबार हैं उनमें भी इसकी रिपोर्ट छप चुकी है । फिर भी राजस्थान के इन इलाकों को अकाल-ग्रस्त घोषित नहीं किया गया है । जब इसके बारे में प्रश्न हुआ था तो मंत्री महोदय ने जवाब में यह नहीं कहा कि राजस्थान का इलाका अकालग्रस्त नहीं है, बल्कि उन्होंने यह कह कर टाल दिया कि यह राजस्थान सरकार का काम है कि उस इलाके को अकाल-ग्रस्त घोषित करे । उन्होंने कहा कि यह काम केन्द्रीय सरकार का नहीं है । इस प्रकार जो इतना महत्वपूर्ण मसला है उसको टाला जा रहा है । यह आदमी की जिन्दगी की बात है . . . .

अध्यक्ष महोदय : श्रीमान् जी, यह फैसला आपके नोटिस मिलने पर स्पीकर करता है कि यह मामला स्टेट का है या नहीं । आप तो आज गवर्नमेंट पर नुक्ताचीनी कर रहे हैं । उनको कहने से कोई फायदा नहीं है ।

श्री किशन पटनायक : यह उन्होंने जवाब दिया था ।

अध्यक्ष महोदय : जब आपके नोटिस आते हैं, तो मैं इस बात का फैसला देता हूं कि यह स्टेट का मामला है । तो आपका यह एतराज मेरे ऊपर आता है ।

श्री किशन पटनायक : अगर वैसा है तो मैं कुछ नहीं कहना चाहता । बस मुझे इतना ही कहना है कि . . .

Shri Bade (Khargone): Can not the Centre give directions to a State that they should declare certain areas as famine areas, because there are Famine Manuals.

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने कहा कि ऐसी बहस उठाने के लिए अवसर मांगा जाता है तो बता दिया जाता है . . . .

श्री किशन पटनायक : मैंने उसके सम्बन्ध में नहीं कहा था । मैंने तो दूसरे सम्बन्ध में कहा था ।

अध्यक्ष महोदय : कहिये ।

श्री किशन पटनायक : जब मंत्री महोदय से कहा गया कि इस इलाके को अकाल ग्रस्त घोषित किया जाये तो उन्होंने कहा था कि यह हमारा काम नहीं है, राज्य सरकार का है।

मैं यह कहना चाहता हूं कि अकाल का विषय अगर अभी केन्द्रीय सरकार का विषय नहीं है, तो उस को जल्दी केन्द्रीय सरकार का विषय बना देना चाहिए, क्योंकि अकाल जैसी स्थिति को तो हर एक स्तर का विषय बना देना चाहिए,—वह पंचायत का भी विषय होना चाहिए और केन्द्र का भी । केन्द्र में जो पार्टी सत्तारूढ़ है, राजस्थान में भी उसी का राज्य है । इसलिए अगर केन्द्रीय सरकार को यह पावर नहीं है कि वह टैक्निकली घोषणा कर सके कि राजस्थान में अकाल की स्थिति है, तो उस को यहां पर अपनी तरफ़ से इस बारे में बयान देना चाहिये । उस को अधिकार है कि सरकारी स्तर पर नहीं, तो गैर-सरकारी स्तर पर राजस्थान सरकार को हिदायत, निर्देश और आदेश दे कि राजस्थान को अकालग्रस्त क्षेत्र घोषित किया जाये ।

जब सारा काम इस ढंग से हो रहा है कि जैसे अकाल पड़ा हुआ है, तो क्यों नहीं यह घोषणा की जा रही है कि वहां पर अकाल की स्थिति है ? राजस्थान के चीफ़ सेक्रटरी साहब ने एक बयान में कहा है कि राजस्थान में एक अस्वाभाविक स्थिति पैदा हो गई है, चार हजार गांव ख़तरे में हैं, २४ लाख आदमी ख़तरे में हैं और २४ लाख गाय-भैंस ख़तरे में हैं। यह सब कहते हुए भी राजस्थान को अकाल-ग्रस्त क्षेत्र घोषित न करना एक पाखंड की बात है ।

अकाल की स्थिति की घोषणा में हमारी दिलचस्पी इसलिए है कि एक तो उस से सारे देश को जानकारी हो जायेगी कि हमारी सोलह साल की आजादी के बाद और बारह साल तक योजनायें चलाने के बाद देश की स्थिति क्या है । दूसरी बात यह है कि इससे वहां के रहने वाले लोगों को भी कुछ राहत मिल सकेगी । वहां पर अकाल-ग्रस्त इलाके में लगान की माफ़ी का अभी तक कोई फ़ैसला नहीं हुआ है । सिर्फ़ यह तय किया गया है कि लगान को सस्पेंड किया जायेगा, स्थगित रखा जायेगा । लेकिन जब पैदावार ही नहीं हुई है, जब लोग भूखों मर रहे हैं, तब अगले साल भी वे लगान कैसे चुका सकेंगे, यह भी सोचने का विषय है ।

इसलिए हमारी पहली बात यह है कि राजस्थान में अकाल की स्थिति है, इस तरह का बयान पार्लियामेंट के फ्लोर पर मंत्री महोदय दें । दूसरी बात यह है कि वहां पर लगान पूरे तौर पर माफ़ किया जाये । तीसरी बात यह है कि यह जो अकाल की स्थिति पैदा हुई है, यह किस तरह पैदा हुई है, इस के बारे में मंत्री महोदय को कोई सफ़ाई देनी चाहिए और उन को बताना चाहिए कि पिछले सोलह सालों में उन इलाकों के विकास के लिए अभी तक क्या क्या योजना कार्यान्वित की गई है और उस का नतीजा क्या निकला है । राजस्थान सुनने में और देखने में फ़िजूलख़र्ची की एक अच्छी जगह है । हम लोग सुनते हैं कि जयपुर में जब कांग्रेस अधिवेशन हुआ, तब वहां क्या क्या हुआ । यह भी सुनने में आता है कि जब प्रधान मंत्री साहब राजस्थान पधारते हैं, तो रोज़ एक लाख रुपये का ख़र्चा हो जाता है । (*Interruptions*) उस की तुलना में राजस्थान के पश्चिमी ज़िलों के विकास के लिए कितना रुपया ख़र्च किया गया है और इन ढाई योजनाओं से क्या क्या नतीजा निकला है, मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे ।

राजस्थान का जो मसला है, यह शत-प्रतिशत पानी के अभाव का मसला है, लेकिन वहां पानी का इन्तज़ाम करने के लिए अभी तक कुछ नहीं हुआ है । अब कहते हैं कि २५० नलकूप खोदे जायेंगे, यह करेंगे, वह करेंगे,

[श्री किशन पटनायक]

लेकिन अभी तक क्या कर रहे थे, इस का जवाब मंत्री महोदय दें । मैं उन से निवेदन करूंगा कि वह इसराइल की बात सोचें, जोकि एक रेगिस्तान था । इन बारह, चौदह सालों में उस का क्या विकास हुआ है और राजस्थान में क्या विकास हुआ है, इस की तुलनात्मक सफ़ाई मंत्री महोदय दें । राजस्थान के इन इलाकों के विकास के लिए वैज्ञानिक आधार पर एक रेगिस्तान विकास संस्था बनाई जाये, जिस की देखरेख में वहां पर विकास कार्य हो ।

हमारी चौथी और आखिरी बात यह है कि अगला जनवरी मास सब से अधिक खतरनाक समय होगा, खास तौर से पशुओं के लिए जो लोग उधर घूम कर आए हैं, उन का अन्दाज है और अधिकारियों का भी यह कहना है कि जनवरी-फ़रवरी तक कम से कम पचास हज़ार पशु तो मर जायेंगे । उन की रक्षा कैसे हो सकती है ? पशु मरेंगे और लोग भागेंगे । वे अब भी भाग रहे हैं । हमारा सुझाव है कि पार्लियामेंट के सदस्यों का एक कमीशन बिठाया जाय, जो इस बात की तुलनात्मक जांच करे कि उन इलाकों में कितने लोग और पशु रहते हैं और जनवरी-फ़रवरी तक कितने लोग और पशु वहां पर रहते हैं, ताकि अकाल की स्थिति के बारे में सब तथ्य पूरी तरह से मालूम हो जाय ।

Shrimati Gayatri Devi (Jaipur): In view of the fact that there is shortage of water in Western Rajasthan, may I know what measures the Rajasthan Government propose to take or propose to put up to the Union Government to combat the shortage of water there and consequently the shortage of fodder also? May I also know how the Rajasthan Government have utilised the grant of Rs. 1 crore that the Central Government is supposed to have given to them? In view of the fact that the rains failed in May, June and July and the Government of Rajasthan knew that those conditions would prevail, may I know why adequate arrangements were not made to combat these conditions?

श्री रामसेवक यादव (बाराबंकी) : अध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय ने पिछली बार कहा था कि हिसार और राजस्थान में जानवर बिल्कुल नहीं मरे हैं, लेकिन अख़बारों में ख़बरें शाया हुई हैं, सरकार के रेडियो से भी यह कहा गया कि और इस के अतिरिक्त हमारे माननीय मित्र, श्री सिंघवी, ने, जो उस इलाके में घूम कर आए हैं, यह बताया है कि वहां जानवर मरे हैं । मैं यह जानना चाहता हूं कि इस सम्बन्ध में वस्तु-स्थिति क्या है ।

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य-मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) : अध्यक्ष महोदय, मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि इस विषय की चर्चा आज इस सदन में हुई, जिसकी बदौलत माननीय सदस्यों का ध्यान इस अहम मसले की ओर आकृष्ट होगा । परन्तु मेरे मित्र, श्री किशन पटनायक, ने ज्यादातर उड़ीसा में हुई कठिनाइयों की चर्चा की और बताया कि वहां पर हैजे से दो हज़ार लोगों का देहावसान हुआ है । चारे के सम्बन्ध में यह सवाल है, मगर माननीय सदस्य ने हैजे से मृत्युओं की चर्चा की, यह बात मेरी समझ में नहीं आई । उन्होंने यह भी नहीं बताया कि किस इलाके में कितने पशुओं की मृत्यु हुई ।

मेरे दूसरे परम् मित्र, श्री रामसेवक यदाव, ने कहा कि माननीय सदस्य, श्री सिंघवी जी, वहां पर घूम कर आए हैं और उन्हों ने बताया है कि वहां पर पशुओं की मृत्यु हुई है । लेकिन मैं उन को सूचना देना चाहता हूं कि श्री सिंघवी के भाई की शादी अभी कलकत्ते में थी, जिस के कारण पिछले बीस दिनों से वह वहां थे । वहां से मुझे भी निमंत्रण मिला था । मैं नहीं समझता कि इन दोनों बातों में क्या तुक है ।

महारानी साहबा ने पूछा कि राजस्थान सरकार की ओर से इस सम्बन्ध में क्या किया जा रहा है और भारत सरकार इस में क्या सहायता देने की बात सोच रही है । यह बहुत माकूल बात है । मैं मानता हूं कि इस साल वर्षा का अभाव रहा है और, जैसाकि महारानी साहबा ने कहा,वहां के लिए यह कोई नई बात नहीं है । वहां पर दो चार बरसों का अन्तर दे दे कर अक्सर यह चीज होती आई है । आज़ादी हासिल करने के बाद हम ने योजनाबद्ध विकास करने की कोशिश की है । श्री किशन पटनायक ने कहा है कि योजना असफल हुई है और सरकारी प्रशासन भी इस का मुकाबला करने में सफल नहीं हुआ है, जहां तक योजना का सम्बन्ध है, मैं उनको बताना चाहता हूं कि इस बात का शायद उनको पता नहीं है कि योजना के अन्तर्गत राजस्थान के उन इलाकों में जहां बालू का ढेर है, राजस्थान नहर जा रही है । जैसलमेर में जहां पानी बहुत कम मिलता था वहां करीब ६५,००० एकड़ ज़मीन सिंचाई करने लायक अभी हो रही है । हमारे मित्र थामस जी ने नलकूपों की व्यवस्था की है, और जब वे चालू हो जायेंगे तो ६५,००० एकड़ ज़मीन सिंचाई के अन्दर आ सकेगी ।

श्री किशन पटनायक : पैदावार कम हुई है ।

डा० राम सुभग सिंह : पैदावार का जहां तक सम्बन्ध है, मेरे बड़े अनन्य मित्र श्री पटनायक जी उड़ीसा से आते हैं । वहां पर इन्डस्ट्री भी पूरी मात्रा में है और खेती की जमीन भी उत्तम ढंग की है । उन सरीखा मित्र अगर उड़ीसा में काम करता है और फिर भी वहां गरीबी बराबर रहती है तो इसके लिए आज चाहे प्रशासन सीधे जवाब .....

श्री किशन पटनायक : दूसरे पटनायक जिम्मेदार हैं, मैं नहीं हूं । आप फर्क नहीं कर रहे हैं ।

डा० राम सुभग सिंह: राजस्थान सरकार ने इस समस्या का मुकाबला करने के लिए क्या कुछ किया है, यह मैं आपको बतलाना चाहता हूं । ८५ लाख रुपया खर्च करके वहां चारा पहुंचाने की व्यवस्था की जा रही है । अभी ३,८९४ गांवों में कुछ कठिनाई पैदा हो गई है पशुओं के चारे की । इसका कुल क्षेत्रफल लगभग ४५,००० वर्ग-मील है ।

हमारे माननीय सदस्य एक बहुत तगड़ी पार्टी का प्रतिनिधित्व करते हैं । उन्होंने एक कमीशन बनाने की मांग की है । मैं तो उनसे आशा करता था कि खुद जाते, देखते और बताते कि क्या कार्रवाई करें । मैं तैयार था उस कार्रवाई को करने के लिए । उन आदमियों की संख्या पूछी जाती है जो प्रभावित हुए हैं, । ४५,००० वर्ग मील में कोई २७–२८ लाख आदमी इससे प्रभावित हुए हैं । जैसा अखबारों में निकला है अगर प्रति व्यक्ति एक पशु हो तो २७ लाख पशुओं को हमें देखना है । उनका इन्तिजाम करना है । अगर कुछ पशुओं को मध्य प्रदेश क्षेत्र में ले जाया जा सके जहां कुछ चरी है, तो उनको वहां राजस्थान सरकार ले जा रही है । बीस केन्द्र उन्होंने खोले हैं जहां प्रति पशु प्रति दिन तीन किलोग्राम घास दिया जाता है ।

हमारे सुरक्षा मंत्री ने, जो इनके पास घास रहता है, सेना के घोड़ों के लिए उसमें से पांच सौ टन कहा है कि तुम जा करके बंटवा सकते हो । इसके लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूं । राजस्थान में जितने जंगल हैं, वहां से हर जिले के लिए वन विभाग ने खोल दिया है कि एक लाख मन बीकानेर इत्यादि में घास ले जा सकते हो । अगर स्थानों के नाम मैं बताऊं तो काफी वक्त लग जाएगा कि कहां कहां घास भेज दी गई है । इसके अलावा सात लाख मन भूसा और घास राजस्थान सरकार दूसरी जगहों से खरीद कर लाने की बात सोच रही है और उसको

[डा० राम सुभग सिंह]

लाया जा रहा है । पचास हजार पशु बाहर जा रहे हैं, उनके जाने का खर्च, जब उनको आना होगा, उसका खर्च और वहां उन लोगों को काम देने के बारे में जो चीजें हैं, सब की व्यवस्था की जा रही है ।

राजस्थान के मुख्य मंत्री १० तारीख को आए थे । उनकी कृषि और खाद्य मंत्री से बातें हुई थीं । उन्होंने बताया है कि तनिक भी घबराने की जरूरत नहीं है । अगर लोगों को आतंकित करने का ही मन्तव्य हो तो हम लोग भी उसका मुकाबला करने के लिए तैयार हैं और उसका भी परिमार्जन किया जा सकता है । घबराने की कोई बात नहीं है । उन्होंने यह भी कहा है कि हम इस समस्या को काफी मुस्तैदी से सभाल रहे हैं । लोगों को प्रचार का शिकार नहीं होना चाहिये । जिनका एक मात्र पेशा गलत प्रचार करना है, उससे उनको घबराना नहीं चाहिये । मध्य प्रदेश की सरकार ने कहा है कि मध्य प्रदेश के जिस जिले में थोड़ा भी अतिरिक्त भूसा या घास है, उसको खरीदने की व्यवस्था कर दी जाय और वह हो गई है । करीब डेढ़ लाख मन भूसा वहां से जा रहा है । उत्तर प्रदेश की सरकार ने करीब पचास हजार मन घास की बात कही है और उसको एक जगह लाकर रख दिया गया है । राजस्थान सरकार के अफसर और हमारे अफसर इसको हटा रहे हैं ।

पंजाब की बात भी की जाती है । बम्बई से खली वगैरह पंजाब भेजी जा रही है । दादरी में एक वैगन भेज दी गई है । एक हजार मन घास कालका से, हिमाचल प्रदेश की सरकार ने जो दी थी, उसको भी पंजाब भेजने की व्यवस्था की जा रही है और वहां के मुख्य मंत्री से कहा गया है कि उसे जहां चाहें भेजें । जरूरतों को हर संभव रीति से पूरा करने की कोशिश जो हो सकेगी, होगी । जो जरूरत है उसको पूरा करने की व्यवस्था की जाएगी ।

अकाल की घोषणा करने की माननीय सदस्य ने मांग की है (इंटरप्शन) हमारे कछवाय जी को तो अकाल की तनिक भी छूत नहीं लगी है और न ही हमारे बड़े साहब को । अगर लगी होती तो वे इतने जोरों से न बोलते ।

जहां तक अकाल की बात है, राजस्थान के मुख्य मंत्री ने कहा है कि ऐसी व्यवस्था हमने की है कि कोई भी व्यक्ति जो काम करने की इच्छा रखता है उसको कम से कम चौदह मील के अन्दर हम नहर का काम दे सकेंगे, चाहे वह माइनर स्कीम का हो, तालाब वगैरह की मरम्मत का हो या नलकूप बनाने का काम हो ।

राशन शाप्स वगैरह भी ज्यादा से ज्यादा खोली जा रही हैं । १५६ फेयर प्राइस शाप्स वहां पर खोल दी गई हैं । कुछ लोग पशुओं को ले जा रहे हैं । कुछ इलाके हैं जहां से जाना कठिन है । अन्न का अभाव कहीं नहीं है । जहां कहिये अनाज आज भी पहुंचाया जा सकता है । वहां की सरकार जिस वक्त कहेगी, ऐसा कर दिया जायेगा । सवाल यह है कि अगर वर्षा न हुई तो क्या होगा । बीकानेर में १२२ कुओं से पानी साढ़े बारह रुपये प्रतिदिन खर्च करके बराबर निकाला जा रहा है और जिस किसी को पशुओं के लिए अथवा अपने लिये पानी की जरूरत है, वह वहां से ले सकता है । दिन भर राजस्थान सरकार पानी खिंचवाती है और लोग उसका उपयोग करते हैं । सूखे हुए कुओं में जहां पानी मिलने की सम्भावना है, उनको भी दुरुस्त करवाने की कोशिश की जा रही है । यही बात तालाबों के बारे में है । आतंक बिल्कुल नहीं है और आतंक वाली बात को मैं काटना

चाहता हूं । स्थिति आज साधारण इस माने में है कि पिछली जो वर्षा हुई थी उससे कुछ हद तक राहत पहुंच गई थी । आज यह है कि राजस्थान सरकार इस समस्या को हल करने के लिए काफी रुपया खर्च कर रही है । ८५ लाख रुपये की जो बात मैंने कही है वह राजस्थान सरकार की योजना है । लेकिन उनका निश्चय यह है कि वे चार करोड़ रुपया खर्च करेंगे और इसकी निसबत वे भारत सरकार से भी निवेदन कर सकेंगे । लेकिन हम इस अनुमान पर चलते हैं कि अगर बिल्कुल वर्षा आज से जून तक न हुई तो भी इस का मुकाबला बगैर घबराये हुए हम कर लेंगे । २७ लाख पशुओं को, खाने के लिए दे देंगे । अब तक तो वहां के तीन चार जिलों के पशु जाते थे बहावलपुर की ओर या पाकिस्तान की ओर । वह मार्ग अब बन्द हो गया है । लेकिन मध्य प्रदेश की ओर या जोधपुर डिवीजन या जालोर की तरफ जो पशु जाते थे, वे आज भी जा रहे हैं । आज बहावलपुर का मार्ग बन्द है । बीकानेर में, बाड़मेर में, भीलवाड़ा, अजमेर, चुरू, जोधपुर, सिरोही, पाली नागोर, जालोर, हर जगह पर कुछ न कुछ घास के केन्द्र खोले गये हैं और अच्छा इन्तजाम है । हम लोग खुद अपने यहां से, भारत सरकार की ओर से भी करीब ३२ हजार बैग उपलब्ध कराने की सोच रहे हैं और हर बैग ढाई मन वाला होगा । आप कल्पना कीजिये, उस की ताकत भूसे के चार गुने के बराबर हो जायेगी । भिवानी में चूनी पड़ी है गोआर की, और और जगहों में भी है । जहां पर भी अतिरिक्त भूसा, घास या खुद्दी है, राजस्थान सरकार की निगाह उस पर है । ऐसी कोई बात नहीं होगी कि माननीय सदस्य की उस पर निगाह हम लोगों से या राजस्थान सरकार से पहले पहुंचे । अगर उन की निगाह कहीं भी हम लोगों से पहले पहुंचेगी तो उसका हम फायदा उटायेंगे, लेकिन मुझे तनिक भी भरोसा नहीं है कि कभी भी वे लोग दोनों सरकारों के आगे की बात सोच सकेंगे ।

एक माननीय सदस्य : आप अकाल की घोषणा करेंगे या नहीं ।

17 hrs.

डा० राम सुभग सिंह : हम अकाल की घोषणा आप के कहने से नहीं करेंगे और अगर वहां अनाज नहीं रहेगा तो आप के कहने से पहले हम वहां अकाल की घोषणा कर देंगे । लेकिन आज अनाज की उपलब्धि का सवाल नहीं है । अनाज वहां है । यह आप कह सकते हैं कि वर्षा न होने के कारण कोई जाता है तो कठिनाई जरूर होती है, लेकिन अनाज वहां प्राप्त हो सकता है । अभी हो रहा है और और भी भेज सकते हैं दूसरी जगहों में ।

यहां कमीशन बनाने की बात कही जाती है । कमीशन बनाने की बात राज्य सरकार की जिम्मेदारी है । यह बात बिल्कुल सही है कि अकाल घोषित करने का जो काम है वह राज्य सरकार का काम है । वह परिस्थिति का अध्ययन करके अगर चाहें तो अकाल घोषित कर सकते हैं । आज उन्होंने घोषणा कर दी है कि वर्षा न होने के कारण स्केअर्सिटी कंडिशन है । जो जरूरत की चीज है अगर उस को पहुंचाने में हम आनाकानी करते तब आप को कहने की जरूरत पड़ती । लेकिन कहां आनाकानी है । इसलिये मैं आप की इस बात को नहीं मानता हूं ।

जहां तक इजराइल का सवाल है, वह बिल्कुल सही है, इसे मैं मानता हूं । लेकिन आप खुद सोचिये कि इजराइल के आदमियों को हमारे मित्र श्री पटनायक और दूसरे लोग क्या समझते हैं । क्या वे इजराइल के आदमियों के बराबर काम करते हैं । अगर नहीं करते : . . .

श्री किशन पटनायक : हिन्दुस्तान का आदमी सब से कम कैलोरी खाता है ।

डा० राम सुभग सिंह : अगर उतना नहीं करते तब कैसे यह बात कह सकते हैं । उन्होंने रेगिस्तान का विकास करने के सम्बन्ध में भी

[डा० राम सुभग सिंह]

कहा । एग्रिड जोन रिसर्च इन्स्टिट्यूट की ओर से हर ढंग की चीजों के ऊपर देख रेख होती है और हम लोग उस को और आगे बढ़ावेंगे ।

श्री शिव नारायण (बांसी) : क्या कृषि मंत्री बतलायेंगे कि उन्होंने कितने दिन तक राजस्थान का दौरा किया ।

डा० राम सुभग सिंह: बिल्कुल दौरा नहीं किया । इसलिये वहां जो पशुओं की कटिनाई की समस्या है उस कठिनाई को हम लोग ज्यादा से ज्यादा आगे बढ़ कर हल करेंगे अगर कहीं पर किसी भी पशु पालने वाले आदमी को खाने की दिक्कत होती है तो इसके लिये भी राजस्थान, गुजरात, पंजाब की गवर्नमेंट्स इमदाद करेंगी अगर उड़ीसा में भी कहीं दिक्कत हो तो उस के लिये भी इमदाद देंगी ।

17.04 hrs.

MEMBER SWORN

The Minister of Parliamentary Affairs (Shri Satya Narayan Sinha): Mr. Speaker, Sir, Shri Chandrabhan Singh has been returned to Lok Sabha from Bilaspur constituency. He could not reach the House in time to be sworn in before the commencement of today's sitting due to circumstances beyond his control as he unfortunately missed the train. I would request that he may be sworn in now as it is the last sitting of the Session.

Mr. Speaker: There is no objection. Secretary may call out the name of the Member.

Secretary: Shri Chandrabhan Singh.

Mr. Speaker: The Minister of Parliamentary Affairs may introduce the Member to the House.

Shri Satya Narayan Sinha: Sir, I have great pleasure in introducing to you and through you to the House Shri Chandrabhan Singh who has been returned to Lok Sabha from Bilaspur constituency of Madhya Pradesh in the vacancy caused by the election of Shri Satya Prakash having been declared void.

Shri Chandra Bhan Singh (Bilaspur)

17.06 hrs.

ADJOURNMENT OF HOUSE

Mr. Speaker: Now, of course, I need not say anything. The session has been quite an exciting one. Besides the legislative business, we have had many discussions. Sometimes I have wondered if it were not due to the indulgence and the forgiving nature of the Members what would be the fate of the Speaker who has to disappoint so many of the Members every day. I cannot find even one Member whom I might not have disappointed at one time or the other. I am grateful to all the Members that they have been cooperative. I give them my good wishes that they might go to their constituencies and work for the service of the country. Now the Hopes will stand adjourned *sine die*.

17.07 hrs.

The Lok Sabha then adjourned sine die.